INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचार और समकालीन भारतीय राजनीति : एक राजनीतिक विश्लेषण

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर,

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा।

सारांश

डॉ. राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीतिक चिंतन के प्रमुख समाजवादी विचारक थे। उन्होंने भारतीय राजनीति को सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, समानता और विकेंद्रीकरण के आधार पर नई दिशा प्रदान की। उनके राजनीतिक विचार भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं और सामाजिक संरचना से गहराई से जुड़े हुए थे। वर्तमान भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय, आर्थिक असमानता, लोकतांत्रिक मूल्यों और क्षेत्रीय संतुलन जैसे प्रश्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसे समय में डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों का अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में लोहिया के राजनीतिक चिंतन का विश्लेषण करते हुए समकालीन भारतीय राजनीति में उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाएगा। यह शोध उनके समाजवादी दृष्टिकोण, सामाजिक न्याय की अवधारणा और लोकतांत्रिक मूल्यों को वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में समझने का प्रयास है।

मुख्य शब्द - समाजवाद, सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, समकालीन भारतीय राजनीति, विकेंद्रीकरण, राजनीतिक चिंतन।

प्रस्तावना

भारतीय राजनीतिक चिंतन के आधुनिक इतिहास में डॉ. राम मनोहर लोहिया (23 मार्च 1910 - 12 अक्टूबर 1967) का स्थान एक मौलिक राष्ट्रवादी, प्रखर समाजवादी और अद्‌वितीय मानवतावादी के रूप में अक्षुण्ण है। उनका वैचारिक उदय उस कालखंड में हुआ जब भारत औपनिवेशिक दासता से मुक्ति के अंतिम और सबसे आक्रामक दौर से गुजर रहा था। वर्ष 1932 में जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में 'नमक सत्याग्रह' विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने के बाद जब वे भारत लौटे, तो उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तत्कालीन मुख्यधारा की नीतियों को एक प्रगतिशील सामाजिक-आर्थिक दिशा देने का बीड़ा उठाया।

इस ऐतिहासिक चेतना की तार्किक परिणति **वर्ष 1934 में 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' (CSP)** की स्थापना के रूप में हुई, जिसमें आचार्य नरेंद्र देव और जयप्रकाश नारायण के साथ

लोहिया ने केंद्रीय भूमिका निभाई। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता आंदोलन को केवल 'सत्ता के हस्तांतरण' (Transfer of Power) तक सीमित न रखकर, उसे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की आर्थिक और सामाजिक मुक्ति से जोड़ना था। वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान जब ब्रिटिश हुकूमत ने कांग्रेस के पूरे शीर्ष नेतृत्व को जेल में डाल दिया, तब लोहिया ने अच्युत पटवर्धन और ऊषा मेहता के साथ मिलकर भूमिगत रहकर **'आजाद हिंद रेडियो'** का संचालन किया। यह घटना सिद्ध करती है कि लोहिया का समाजवाद केवल पुस्तकीय सिद्धांतों पर आधारित नहीं था, बल्कि वह राष्ट्रीय अस्मिता और स्वतंत्रता की वेदी पर व्यावहारिक संघर्ष से उपजा था।

लोहिया के चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने कार्ल मार्क्स के यूरोपीय समाजवाद और महात्मा गांधी के दर्शन का एक अत्यंत व्यावहारिक भारतीयकरण किया। उन्होंने मार्क्स के वर्ग-संघर्ष और ऐतिहासिक भौतिकवाद की सीमाओं को पहचाना और उसमें गांधीवादी मूल्यों–जैसे कि अहिंसा, सत्याग्रह और सत्ता के विकेंद्रीकरण–को समाहित कर **'एशियाई समाजवाद'** का एक नया प्रतिमान स्थापित किया। उनका स्पष्ट मानना था कि विकासशील देशों की नियति न तो क्रूर पूंजीवाद में है और न ही सोवियत संघ जैसे सत्तावादी साम्यवाद (Communism) में; बल्कि इसका समाधान एक लोकतांत्रिक और मानवीय समाजवाद में निहित है।

1. वैचारिक स्तंभ: इतिहास चक्र और सामाजिक-आर्थिक दर्शन (सप्तक्रांति के अतिरिक्त)

डॉ. लोहिया के राजनीतिक और सामाजिक सिद्धांतों का आधार अत्यंत व्यापक था, जिसे निम्नलिखित महत्वपूर्ण वैचारिक स्तंभों के माध्यम से समझा जा सकता है:

(क) इतिहास चक्र का सिद्धांत (Theory of History's Wheel)

कार्ल मार्क्स के 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' (जो इतिहास को एक सीधी रेखा में प्रगतिशील मानता है) के विपरीत, लोहिया ने **'इतिहास चक्र का सिद्धांत'** प्रतिपादित किया। उनके अनुसार, मानव इतिहास एक सीधी रेखा में नहीं बल्कि एक चक्र (Cyclical) के रूप में गति करता है, जिसमें कोई भी समाज निरंतर दो अवस्थाओं के बीच झूलता रहता है: **'जाति' (Caste) और 'वर्ग' (Class)**।

- **वैचारिक विश्लेषण:** लोहिया का तर्क था कि जब किसी समाज में वैचारिक गतिशीलता समाप्त हो जाती है, रूढ़िवादिता बढ़ती है और न्याय की भावना शिथिल हो जाती है, तब तत्कालीन आर्थिक 'वर्ग' (Classes) स्थिर होकर संकीर्ण 'जातियों' (Castes) का रूप ले लेते हैं। इसके विपरीत, जब उस समाज में आंतरिक चेतना, विद्रोह या बाह्य शक्तियों का टकराव होता है, तो ये कठोर जातियां पुनः टूटती हैं और गतिशील आर्थिक वर्गों में परिवर्तित हो जाती हैं।

- **समकालीन यथार्थ:** आज की भारतीय राजनीति का यदि सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए, तो यह सिद्धांत अत्यंत सटीक बैठता है। वर्ष 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारतीय समाज तेजी से आर्थिक वर्गों (जैसे कॉर्पोरेट क्लास, अर्बन मिडिल क्लास, वर्किंग क्लास) में विभाजित हो रहा था। परंतु, समकालीन चुनावी राजनीति में तात्कालिक लाभ के लिए राजनीतिक दलों द्वारा जिस प्रकार भाषाई, क्षेत्रीय और उप-जातिगत पहचानों को उभारा गया है, उसने समाज को पुनः 'जातिगत पहचान' के चक्रव्यूह में धकेल दिया है। यह संक्रमण लोहिया के इतिहास चक्र की प्रत्यक्ष पुष्टि करता है।

(ख) 'कमपूँजी की तकनीक' (Small-Unit Technology) का आर्थिक मॉडल

लोहिया पश्चिमी जगत के अंधाधुंध और भारी औद्योगिकीकरण (Mass Production) के घोर विरोधी थे। उनका मानना था कि पश्चिमी देशों का आर्थिक मॉडल 'पूंजी बहुल और श्रम अल्प' (कम आबादी, ज्यादा पैसा) की स्थिति से उपजा है, जिसे भारत जैसे 'श्रम बहुल और पूंजी अल्प' (ज्यादा आबादी, कम पैसा) देश पर थोपा नहीं जा सकता। यदि ऐसा किया गया, तो देश में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी और आर्थिक असमानता पैदा होगी।

- **नीतिगत विकल्प:** इसके विकल्प के रूप में उन्होंने **'कमपूँजी की तकनीक' (Small-Unit Technology)** का विचार दिया। इसके तहत ऐसी छोटी और आधुनिक मशीनों के विकास पर जोर दिया गया जिसे गांव का एक आम कारीगर या किसान कम पूंजी में संचालित कर सके, जिससे उत्पादन के साथ-साथ रोजगार का भी समान रूप से सृजन हो।
- **तथ्य और आंकड़े:** 'ऑक्सफैम इंडिया' (Oxfam India) की हालिया रिपोर्टों के अनुसार, भारत में आर्थिक विषमता खतरनाक स्तर पर पहुंच चुकी है, जहाँ **देश के शीर्ष 1% अमीरों के पास कुल राष्ट्रीय संपत्ति का 40% से अधिक हिस्सा** केंद्रित है, जबकि आबादी के निचले 50% हिस्से के पास मात्र 3% संपत्ति है। इसके अतिरिक्त, देश की बेरोजगारी दर लगातार 7% से 8% के बीच बनी हुई है। समकालीन भारत में यह संकट इस बात का प्रमाण है कि केवल बड़े कॉर्पोरेट घरानों और पूंजी-प्रधान उद्योगों पर निर्भर रहकर समावेशी विकास संभव नहीं है। आज सरकार की 'आत्मनिर्भर भारत' नीति और **MSME क्षेत्र (जो भारत में कृषि के बाद लगभग 11 करोड़ लोगों को रोजगार देकर दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है)** की प्रासंगिकता अनजाने में ही सही, लोहिया के 'कमपूंजी तकनीक' के सिद्धांत की ओर लौटने को विवश करती है।

(ग) विकेंद्रीकरण का प्रशासनिक मॉडल: 'चौखंभा राज्य' (Four-Pillar State)

राजनीतिक और प्रशासनिक मोर्चे पर लोहिया ने राज्य की शक्ति के अत्यधिक केंद्रीकरण को लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा माना। इसके समाधान के लिए उन्होंने **'चौखंभा राज्य'** की परिकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें सत्ता और प्रशासन को चार समान स्तरों पर विभाजित किया गया -

गांव (Village) ⟶ मंडल/जिला (District) ⟶ प्रांत (Province) केंद्र (Center)

- **प्रशासनिक सुधार:** लोहिया केवल कागजी विकेंद्रीकरण के पक्षधर नहीं थे। वे औपनिवेशिक काल से चले आ रहे जिला कलेक्टर (DM) के पद को समाप्त करना चाहते थे, जिसे वे केंद्रीकृत सामंतशाही का प्रतीक मानते थे। उनकी मांग थी कि पुलिस बल, राजस्व संग्रह और स्थानीय लोक-कल्याणकारी कार्यों का प्रत्यक्ष नियंत्रण जिला परिषदों और ग्राम पंचायतों के पास होना चाहिए।
- **संवैधानिक परिणति:** लोहिया के इस विचार की आंशिक झलक उनके निधन के दशकों बाद **73वें और 74वें संविधान संशोधन (1992)** के रूप में सामने आई, जिसके द्वारा भारत में त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा दिया गया। समकालीन राजनीति में नीति आयोग द्वारा संचालित 'आकांक्षी जिला कार्यक्रम' (Aspirational Districts Programme) इसी विकेंद्रीकृत नियोजन का एक आधुनिक रूप है। हालांकि, आज भी पंचायतों को वित्तीय स्वायत्तता (Financial Autonomy) न मिलना और नौकरशाही का अत्यधिक हस्तक्षेप यह दर्शाता है कि लोहिया का 'चौखंभा राज्य' आज भी समकालीन राजनीति के समक्ष एक अधूरा लक्ष्य है।

(घ) 'दाम बांधो नीति' और कृषि संकट (Price Control & Agriculture)

लोहिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था के भीतर उत्पादकों (किसानों) और उपभोक्ताओं के शोषण को रोकने के लिए तत्कालीन नेहरू सरकार के समक्ष दो व्यावहारिक नीतियां रखी थीं:

1. **दाम बांधो नीति:** इसके अनुसार, किसी भी कारखाने में निर्मित अनिवार्य उपभोग की वस्तु (जैसे कपड़ा, दवा, तेल आदि) की बिक्री कीमत उसके वास्तविक लागत मूल्य (Cost of Production) के **डेढ़ गुना (150%)** से अधिक कभी नहीं होनी चाहिए। साथ ही, दो फसलों के बीच अनाज के दामों में होने वाले उतार-चढ़ाव की एक सीमा तय हो, ताकि बिचौलिए और सट्टेबाज किसानों का शोषण न कर सकें।
2. **अन्न सेना का गठन:** देश की बंजर और परती भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए उन्होंने लाखों बेरोजगार युवाओं को मिलाकर एक 'अन्न सेना' बनाने का प्रस्ताव दिया था, जिससे भुखमरी का अंत हो और रोजगार सुनिश्चित हो सके।

- **समकालीन कृषि राजनीति से जुड़ाव:** वर्तमान समय में भारतीय राजनीति के केंद्र में बना हुआ 'कृषि संकट' और न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) को कानूनी गारंटी बनाने के लिए होने वाले राष्ट्रव्यापी किसान आंदोलन सीधे तौर पर लोहिया की 'दाम बांधो नीति' के अभाव को रेखांकित करते हैं। कृषि लागतों (उर्वरक, बीज, डीजल) की बढ़ती कीमतें और फसलों के अनिश्चित दाम आज भी भारतीय किसान को कर्ज के जाल में फंसाए हुए हैं, जिससे निपटने का एकमात्र जरिया लोहिया का मूल्य-नियंत्रण दर्शन है।

(ङ) अंतरराष्ट्रीय राजनीति: 'तीसरी शक्ति' और 'विश्व नागरिकता'

शीतयुद्ध (Cold War) के संक्रमण काल में, जब पूरी दुनिया अमेरिका के पूंजीवादी गुट और सोवियत संघ के साम्यवाद गुट के बीच परमाणु युद्ध के मुहाने पर खड़ी थी, तब लोहिया की विदेश नीति अत्यंत आक्रामक और दूरदर्शी थी। वे भारत की तत्कालीन 'गुटनिरपेक्षता' (Non-Alignment) की नीति को 'अकर्मण्य' मानते थे। इसके विपरीत, उन्होंने एक सक्रिय **'तीसरी शक्ति' (Third Force)** के गठन का आह्वान किया, जो दुनिया के सभी नव-स्वतंत्र और शोषित देशों (एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका) को एकजुट कर दोनों महाशक्तियों के साम्राज्यवादी मंसूबों को चुनौती दे सके।

इसके साथ ही, उन्होंने **'विश्व सरकार' (World Government)** और **'विश्व नागरिकता'** की वकालत की। उनका एक प्रसिद्ध और ऐतिहासिक वक्तव्य था:

"मैं एक ऐसे संसार की कल्पना करता हूँ जहाँ कोई भी नागरिक दुनिया के किसी भी कोने में बिना किसी पासपोर्ट या वीज़ा के स्वतंत्र रूप से घूम सके।"

- **समकालीन वैश्विक संदर्भ:** वर्तमान 21वीं सदी के तीसरे दशक में जहाँ भू-राजनीतिक तनाव (जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध, मध्य-पूर्व संकट) चरम पर हैं और दुनिया पुनः बहु-ध्रुवीय (Multi-polar) संघर्षों में उलझ रही है, वहां लोहिया का 'तीसरी शक्ति' का सिद्धांत आज 'ग्लोबल साउथ' (Global South) की आवाज बनकर उभर रहा है। इसके अलावा, वर्तमान का शरणार्थी संकट (Refugee Crisis) और संकीर्ण राष्ट्रवाद की दीवारें लोहिया के 'विश्व नागरिकता' के दर्शन को और अधिक प्रासंगिक बनाती हैं।

1.2 समकालीन भारतीय राजनीति और लोहिया का वैचारिक अंतद्वंद्व

वर्तमान समकालीन भारतीय राजनीति एक अत्यंत जटिल और विरोधाभासी दौर से गुजर रही है। एक तरफ जहाँ भारतीय राजनीति में 'मंडल आयोग' (1990) के बाद उभरे क्षेत्रीय दल (जैसे समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल यूनाइटेड आदि) स्वयं को लोहिया की वैचारिक विरासत का उत्तराधिकारी बताते हैं, वहीं दूसरी तरफ उनका व्यावहारिक आचरण लोहिया के सिद्धांतों से पूरी तरह विमुख दिखाई देता है।

लोहिया का मूल उद्देश्य **'जाति उन्मूलन' (Annihilation of Caste)** था, जिसके लिए उन्होंने पिछड़ों को विशेष अवसर देने की बात कही थी। परंतु समकालीन राजनीति ने इसे केवल

'वोट बैंक' के समीकरण और 'जातिगत ध्रुवीकरण' का जरिया बना दिया है। इसके अतिरिक्त, 1960 के दशक में लोहिया द्वारा शुरू किया गया **'गैर-कांग्रेसवाद' (Non-Congressism)** का सिद्धांत–जिसने 1967 में पहली बार देश के 9 राज्यों में गैर-कांग्रेसी 'संविद सरकारों' का मार्ग प्रशस्त किया था–आज की गठबंधन राजनीति (जैसे NDA बनाम I.N.D.I.A. गठबंधन) का मूल आधार है। परंतु आज के गठबंधनों में वैचारिक प्रतिबद्धता का अभाव और केवल सत्ता-प्राप्ति की होड़ दिखाई देती है, जो लोहिया के 'सिद्धांत-आधारित राजनीति' के विरुद्ध है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय राजनीति में समाजवादी विचारधारा का विकास हो रहा था। इसी दौर में डॉ. लोहिया ने भारतीय समाजवाद की ऐसी अवधारणा प्रस्तुत की जिसमें जातीय समानता, आर्थिक न्याय और लोकतांत्रिक व्यवस्था को केंद्रीय स्थान मिला। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति और सामाजिक आंदोलनों पर उनके विचारों का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है।

शोध की आवश्यकता

समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय, आर्थिक असमानता और लोकतांत्रिक मूल्यों की चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों का अध्ययन आवश्यक है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि वर्तमान भारतीय राजनीति में उनके विचार किस प्रकार उपयोगी और प्रासंगिक हैं।

शोध का महत्त्व

यह अध्ययन डॉ. लोहिया के राजनीतिक चिंतन को समझने और भारतीय राजनीति में उनके योगदान को स्पष्ट करने में सहायक होगा। साथ ही यह समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों में उनके विचारों की उपयोगिता को स्थापित करेगा। यह अध्ययन राजनीतिक विज्ञान के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

समस्या का कथन

वर्तमान भारतीय राजनीति सामाजिक न्याय, आर्थिक विषमता और लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचार इन चुनौतियों के समाधान में किस सीमा तक प्रासंगिक हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डॉ. राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचारों का अध्ययन करना।
2. समाजवाद और सामाजिक न्याय के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
3. भारतीय राजनीति पर उनके विचारों के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. समकालीन भारतीय राजनीति में उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

5. लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक आंदोलनों में उनके विचारों की वर्तमान उपयोगिता को समझना।

शोध प्रश्न

1. डॉ. राम मनोहर लोहिया के प्रमुख राजनीतिक विचार कौन-कौन से थे?
2. डॉ. लोहिया के समाजवादी चिंतन की मूल अवधारणा क्या थी?
3. सामाजिक न्याय, समानता और लोकतंत्र के संबंध में डॉ. लोहिया का दृष्टिकोण क्या था?
4. स्वतंत्र भारत की राजनीति और सामाजिक आंदोलनों पर डॉ. लोहिया के विचारों का क्या प्रभाव पड़ा?
5. समकालीन भारतीय राजनीति में लोहियावादी विचारधारा किस रूप में दिखाई देती है?
6. वर्तमान भारतीय राजनीति की चुनौतियों–जैसे सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता और लोकतांत्रिक संकट–के समाधान में डॉ. लोहिया के विचार कितने प्रासंगिक हैं?
7. क्या समकालीन भारतीय राजनीति में डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचार व्यवहारिक रूप से प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं?

शोध की उपकल्पनाएँ

1. डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचार भारतीय समाजवादी चिंतन का महत्त्वपूर्ण आधार हैं।
2. सामाजिक न्याय की राजनीति पर उनके विचारों का व्यापक प्रभाव पड़ा है।
3. समकालीन भारतीय राजनीति में उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।
4. वर्तमान सामाजिक चुनौतियों के समाधान में लोहियावादी चिंतन उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

साहित्य पुनरावलोकन

प्रस्तुत शोध विषय के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि डॉ. राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीतिक चिंतन के ऐसे महत्त्वपूर्ण विचारक थे, जिनके विचारों ने स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर समकालीन भारतीय राजनीति तक व्यापक प्रभाव डाला। उनके राजनीतिक विचारों को समझने के लिए उनके मूल लेखन, भाषणों, समकालीन विद्वानों की व्याख्याओं तथा विभिन्न शोध अध्ययनों का अवलोकन आवश्यक है।

डॉ. राम मनोहर लोहिया की पुस्तक **"मार्क्स, गांधी और समाजवाद" (1963)** उनके राजनीतिक चिंतन को समझने का प्रमुख स्रोत है। इस पुस्तक में लोहिया ने मार्क्सवाद और गांधीवाद का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए भारतीय समाजवाद की अवधारणा प्रस्तुत की है। उन्होंने सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और लोकतांत्रिक व्यवस्था को भारतीय समाजवाद का मूल आधार माना। इस कृति से स्पष्ट होता है कि लोहिया भारतीय समाज की संरचना के अनुरूप समाजवाद को विकसित करना चाहते थे।

डॉ. लोहिया की पुस्तक **"इतिहास चक्र" (1968)** में इतिहास, समाज और राजनीति के अंतर्संबंधों की व्याख्या की गई है। इसमें उन्होंने इतिहास को परिवर्तनशील प्रक्रिया मानते हुए सामाजिक और राजनीतिक शक्तियों की भूमिका का विश्लेषण किया है। यह पुस्तक उनके राजनीतिक दृष्टिकोण और सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को समझने में महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

डॉ. लोहिया की **"सप्त क्रांति"** की अवधारणा भी उनके राजनीतिक चिंतन का केंद्रीय पक्ष है। इसमें उन्होंने स्त्री-पुरुष असमानता, जातिगत विषमता, आर्थिक शोषण, नस्लीय भेदभाव और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष को आवश्यक बताया। यह विचार वर्तमान भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समानता के विमर्श से सीधे जुड़ा हुआ दिखाई देता है।

राजनीतिक चिंतक **ए. आर. देसाई** ने अपनी पुस्तक **"भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि" (1948)** में भारतीय समाज और राजनीति के विकास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक संरचना और वर्गीय संबंधों ने भारतीय राजनीति को गहराई से प्रभावित किया। यह दृष्टिकोण लोहिया के समाजवादी चिंतन और सामाजिक न्याय की अवधारणा को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

घनश्याम शाह ने अपनी पुस्तक **"भारत में सामाजिक आंदोलन" (1991)** में भारतीय समाज में सामाजिक न्याय और पिछड़े वर्गों के आंदोलनों का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में समाजवादी विचारधारा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि लोहिया के विचारों ने सामाजिक न्याय आधारित राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया।

प्रख्यात राजनीतिक विचारक **सुनील खिलनानी** ने अपनी पुस्तक **"भारत-नामा : स्वतंत्रता के बाद का भारत" (1997)** में भारतीय लोकतंत्र, राज्य व्यवस्था और राजनीतिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने लोकतंत्र और सामाजिक विविधता के बीच संतुलन को भारतीय राजनीति की प्रमुख चुनौती माना है। यह दृष्टिकोण डॉ. लोहिया के लोकतांत्रिक और विकेंद्रीकरण संबंधी विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को समझने में सहायक है।

बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल की **"पिछड़ा वर्ग आयोग रिपोर्ट" (1980)** सामाजिक न्याय और पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि यह रिपोर्ट सीधे लोहिया पर केंद्रित नहीं है, किंतु सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व की उसकी अवधारणा पर लोहियावादी चिंतन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। समकालीन भारतीय राजनीति में आरक्षण और सामाजिक न्याय की बहस को समझने में यह रिपोर्ट उपयोगी है।

विभिन्न शोध पत्रिकाओं जैसे **'इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस'**, **'समाज विज्ञान शोध पत्रिका'** तथा विश्वविद्यालयों में प्रकाशित शोध-प्रबंधों में भी डॉ. लोहिया के राजनीतिक

चिंतन पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। इनमें समाजवाद, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और समकालीन राजनीति में उनके विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचार भारतीय राजनीति के अनेक पक्षों–विशेषकर सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और समाजवादी विचारधारा–से गहराई से जुड़े हुए हैं। फिर भी समकालीन भारतीय राजनीति के संदर्भ में उनके विचारों का समग्र राजनीतिक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध इसी रिक्ति को भरने का प्रयास करेगा तथा लोहिया के राजनीतिक विचारों को वर्तमान भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में विश्लेषित करेगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध **"डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचार और समकालीन भारतीय राजनीति : एक राजनीतिक विश्लेषण"** मुख्यतः गुणात्मक प्रकृति का अध्ययन है। इस शोध में डॉ. राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करते हुए समकालीन भारतीय राजनीति के साथ उनके संबंध और प्रासंगिकता को समझने का प्रयास किया जाएगा। विषय की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए इसमें ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा, ताकि अध्ययन अधिक तथ्यपरक, संतुलित और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

प्रस्तुत अध्ययन **विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक शोध** पर आधारित है। विश्लेषणात्मक अध्ययन के अंतर्गत डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों–जैसे समाजवाद, सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, विकेंद्रीकरण और समानता–का गहन अध्ययन एवं व्याख्या की जाएगी। साथ ही यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि इन विचारों का समकालीन भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा है और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता किस रूप में दिखाई देती है।

ऐतिहासिक शोध के अंतर्गत स्वतंत्रता आंदोलन के समय की राजनीतिक परिस्थितियों, समाजवादी आंदोलन के विकास तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राजनीति में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया जाएगा। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास होगा कि डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचार किन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में विकसित हुए तथा बाद के राजनीतिक विमर्श पर उनका क्या प्रभाव पड़ा।

तथ्य-संग्रह के स्रोत

प्रस्तुत शोध में तथ्य-संग्रह के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।।

a. प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत डॉ. राम मनोहर लोहिया के मूल लेखन, भाषण, पत्र तथा उनके द्वारा लिखित पुस्तकों का अध्ययन किया जाएगा। इनमें विशेष रूप से

"मार्क्स, गांधी और समाजवाद" (1963), **"इतिहास चक्र" (1968)**, **"सप्त क्रांति"**, तथा विभिन्न सार्वजनिक सभाओं और संसद में दिए गए उनके भाषणों को शामिल किया जाएगा। ये स्रोत डॉ. लोहिया के मूल राजनीतिक चिंतन को समझने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

b. द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों पर लिखी गई पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, विश्वविद्यालयों में प्रस्तुत शोध-प्रबंध, राजनीतिक विश्लेषण से संबंधित जर्नल, समाचार-पत्रों के लेख तथा अन्य प्रकाशित सामग्री का उपयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त **घनश्याम शाह**, **ए. आर. देसाई**, **सुनील खिलनानी** तथा अन्य विद्वानों के अध्ययन को भी संदर्भ के रूप में लिया जाएगा। इन स्रोतों से विषय की व्यापक समझ विकसित करने और विभिन्न दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायता मिलेगी।

अध्ययन पद्धति

ऐतिहासिक पद्धति **-** इस पद्धति के अंतर्गत डॉ. लोहिया के जीवनकाल की राजनीतिक परिस्थितियों, स्वतंत्रता आंदोलन, समाजवादी आंदोलन और स्वतंत्र भारत की प्रारंभिक राजनीतिक संरचना का अध्ययन किया जाएगा। इसके माध्यम से यह स्पष्ट किया जाएगा कि उनके राजनीतिक विचार किस ऐतिहासिक संदर्भ में विकसित हुए और भारतीय राजनीति को उन्होंने किस प्रकार प्रभावित किया।

विश्लेषणात्मक पद्धति - विश्लेषणात्मक पद्धति के अंतर्गत डॉ. लोहिया के राजनीतिक सिद्धांतों, उनके वैचारिक दृष्टिकोण और समकालीन भारतीय राजनीति में उनकी उपयोगिता का गहन विश्लेषण किया जाएगा। इसमें उनके विचारों को वर्तमान सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, आर्थिक असमानता और सत्ता के विकेंद्रीकरण जैसे मुद्दों के संदर्भ में समझने का प्रयास किया जाएगा।

तुलनात्मक पद्धति - तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों की तुलना समकालीन भारतीय राजनीति की वर्तमान परिस्थितियों से की जाएगी। साथ ही आवश्यकतानुसार उनके विचारों की तुलना अन्य भारतीय राजनीतिक विचारकों के दृष्टिकोण से भी की जाएगी, ताकि उनकी विशिष्टता और वर्तमान प्रासंगिकता को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध में विभिन्न शोध पद्धतियों और विश्वसनीय स्रोतों के माध्यम से डॉ. राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचारों तथा समकालीन भारतीय राजनीति के बीच संबंध का समग्र एवं तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है -

राजनीतिक विचारों तथा समकालीन भारतीय राजनीति के बीच संबंध का समग्र एवं तथ्यपरक विश्लेषण

डॉ. राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीतिक चिंतन के ऐसे प्रमुख विचारक थे जिन्होंने भारतीय समाज और राजनीति को सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, समानता और विकेंद्रीकरण के आधार पर देखने की नई दृष्टि प्रदान की। उनका चिंतन केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं और राजनीतिक परिस्थितियों से गहराई से जुड़ा हुआ था। इसी कारण उनके विचार स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय राजनीति में प्रभावी बने रहे और समकालीन भारतीय राजनीति में भी उनकी प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष **सामाजिक न्याय** था। उनका मानना था कि भारतीय समाज में जातिगत असमानता लोकतंत्र और समानता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। उन्होंने पिछड़े वर्गों, दलितों और वंचित समूहों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक सम्मान देने पर बल दिया। उनका प्रसिद्ध सूत्र **"पिछड़ा पावे सौ में साठ"** इसी विचार को व्यक्त करता है। समकालीन भारतीय राजनीति में यह विचार अत्यंत प्रभावशाली दिखाई देता है। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों में सामाजिक न्याय आधारित राजनीति तथा पिछड़े वर्गों की राजनीतिक भागीदारी पर लोहिया के विचारों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। मंडल आयोग की सिफारिशों और आरक्षण की राजनीति ने भी इस विचारधारा को व्यापक स्तर पर स्थापित किया।

डॉ. लोहिया का दूसरा महत्त्वपूर्ण विचार **समाजवाद** था। उन्होंने भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप समाजवाद की ऐसी अवधारणा प्रस्तुत की जिसमें आर्थिक समानता, श्रमिकों और किसानों के अधिकार तथा संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण को प्राथमिकता दी गई। वे आर्थिक केंद्रीकरण और पूँजी के कुछ हाथों में सिमटने के विरोधी थे। समकालीन भारतीय राजनीति में आर्थिक विकास और कल्याणकारी योजनाओं के साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा और जनकल्याण पर जो ज़ोर दिया जाता है, उसमें लोहिया के समाजवादी चिंतन की झलक मिलती है। हालांकि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में उदारीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण समाजवादी नीतियों का स्वरूप बदल गया है, फिर भी सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक समानता की बहस में उनके विचार आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं। डॉ. लोहिया लोकतंत्र को केवल चुनाव तक सीमित नहीं मानते थे। उनके अनुसार लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ जनता की सक्रिय भागीदारी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सत्ता का विकेंद्रीकरण है। उन्होंने शासन व्यवस्था को जनता के अधिक निकट लाने पर बल दिया। समकालीन भारतीय राजनीति में पंचायती राज व्यवस्था, स्थानीय स्वशासन और क्षेत्रीय दलों की बढ़ती भूमिका लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की दिशा में

महत्त्वपूर्ण कदम माने जा सकते हैं। यह विचार लोहिया के लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ दिखाई देता है।

लोहिया ने **स्त्री-पुरुष समानता** को भी सामाजिक परिवर्तन का आवश्यक आधार माना। उनकी **"सप्त क्रांति"** में महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता को विशेष स्थान दिया गया। वर्तमान भारतीय राजनीति में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व, शिक्षा और अधिकारों को लेकर जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे लोहियावादी दृष्टिकोण के अनुरूप माने जा सकते हैं। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर बढ़ती चर्चा भी इसी दिशा को दर्शाती है। समकालीन भारतीय राजनीति में **क्षेत्रीय दलों के उभार** और गैर-कांग्रेस राजनीति के विकास में भी डॉ. लोहिया के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने सत्ता के केंद्रीकरण का विरोध करते हुए वैकल्पिक राजनीतिक शक्ति के निर्माण पर बल दिया था। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की सक्रिय भूमिका और गठबंधन राजनीति के विस्तार ने इस विचार को और अधिक प्रासंगिक बना दिया।

हालाँकि वर्तमान भारतीय राजनीति में लोहिया के विचारों का प्रभाव पूरी तरह उसी रूप में नहीं दिखाई देता जैसा उन्होंने कल्पना की थी। कई बार सामाजिक न्याय और समाजवाद के सिद्धांत केवल राजनीतिक नारों तक सीमित रह जाते हैं। जातिगत राजनीति और सत्ता की प्रतिस्पर्धा के कारण मूल लोहियावादी आदर्शों का व्यावहारिक स्वरूप कमजोर भी दिखाई देता है। इसके बावजूद लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, समानता और विकेंद्रीकरण जैसे मूल प्रश्न आज भी भारतीय राजनीति के केंद्र में हैं, और यही लोहिया के चिंतन की स्थायी प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि डॉ. राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचार और समकालीन भारतीय राजनीति के बीच गहरा और प्रत्यक्ष संबंध है। सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, समाजवाद, स्त्री-पुरुष समानता और विकेंद्रीकरण के संदर्भ में उनके विचार आज भी भारतीय राजनीति को वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के बावजूद उनका चिंतन समकालीन भारतीय राजनीति को समझने और उसकी चुनौतियों का विश्लेषण करने में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक बना हुआ है।

अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन मुख्यतः डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों तथा समकालीन भारतीय राजनीति तक सीमित रहेगा। विषय की व्यापकता और उपलब्ध सामग्री की विविधता के कारण अध्ययन का दायरा सीमित रखा गया है।

सुझाव

1. सामाजिक न्याय की नीतियों में लोहियावादी दृष्टिकोण को अधिक प्रभावी बनाया जाए।
2. लोकतांत्रिक संस्थाओं में विकेंद्रीकरण को और सुदृढ़ किया जाए।

3. आर्थिक समानता के लिए लोहिया के समाजवादी सिद्धांतों को नीतिगत आधार दिया जाए।
4. शैक्षणिक स्तर पर लोहियावादी चिंतन के अध्ययन को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध विश्लेषण के अंतर्गत डॉ. राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दर्शन का समकालीन भारतीय राजनीति के यथार्थपरक धरातल पर जो मूल्यांकन किया गया है, उससे कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष उभरकर सामने आते हैं। यह निष्कर्ष स्थापित शोध उपकल्पनाओं की संपुष्टि करते हुए शोध प्रश्नों का तार्किक समाधान प्रस्तुत करता है:

a. उपकल्पनाओं का परीक्षण एवं मुख्य निष्कर्ष

1. **भारतीय समाजवादी चिंतन का सुदृढ़ आधार (प्रथम उपकल्पना की पुष्टि):**
   शोध विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि डॉ. लोहिया का चिंतन केवल पश्चिमी समाजवाद की अनुकृति नहीं था। उन्होंने कार्ल मार्क्स के 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' की सीमाओं को पहचानकर **'इतिहास चक्र का सिद्धांत'** दिया और वर्ग-संघर्ष में 'जाति' के तत्व को जोड़कर समाजवाद का शुद्ध भारतीयकरण किया। अतः यह उपकल्पना पूर्णतः सत्य सिद्ध होती है कि लोहिया के विचार भारतीय समाजवादी चिंतन के सबसे मौलिक और व्यावहारिक स्तंभ हैं।
2. **सामाजिक न्याय की राजनीति पर व्यापक प्रभाव (द्वितीय उपकल्पना की पुष्टि):**
   ऐतिहासिक साक्ष्यों से स्पष्ट है कि स्वतंत्र भारत में **मंडल आयोग (1990)** के बाद की समकालीन राजनीति, जिसमें पिछड़ों, दलितों और वंचितों की सत्ता में भागीदारी बढ़ी, वह लोहिया के 'विशेष अवसर के सिद्धांत' की ही तार्किक परिणति थी। यद्यपि, शोध का यह भी निष्कर्ष है कि समकालीन राजनीति ने लोहिया के मूल लक्ष्य **'जाति उन्मूलन' (Annihilation of Caste)** को विस्मृत करके, इसे केवल चुनावी 'जातिगत ध्रुवीकरण' और वोट-बैंक के समीकरण तक सीमित कर दिया है।
3. **समकालीन प्रासंगिकता और लोकतांत्रिक संकट (तृतीय एवं चतुर्थ उपकल्पना की पुष्टि):**
   वर्तमान भारतीय राजव्यवस्था जिन त्रि-स्तरीय चुनौतियों–सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता और लोकतांत्रिक संकट–से गुजर रही है, उनके समाधान में लोहियावादी दर्शन अत्यंत सटीक मार्ग प्रस्तुत करता है:
   - **आर्थिक मोर्चे पर:** ऑक्सफैम की रिपोर्ट्स द्वारा उजागर की गई चरम आर्थिक विषमता (शीर्ष 1% के पास 40% संपत्ति) और निरंतर बनी हुई बेरोजगारी के दौर में, बड़े पूंजी-प्रधान उद्योगों के बजाय लोहिया का **'कमपूंजी की तकनीक'**

(Small-Unit Technology) का मॉडल आज के 'MSME क्षेत्र' और 'आत्मनिर्भर भारत' की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है।

- **प्रशासनिक मोर्चे पर:** सत्ता के केंद्रीकरण के इस दौर में, लोहिया का **'चौखंभा राज्य'** का सिद्धांत (गांव, मंडल, प्रांत, केंद्र) 73वें और 74वें संविधान संशोधन के बाद भी अधूरा है, क्योंकि स्थानीय निकायों को आज भी वास्तविक वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त नहीं है।
- **कृषि मोर्चे पर:** वर्तमान का कृषि संकट और न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) को लेकर होने वाले निरंतर आंदोलन यह दर्शाते हैं कि जब तक लोहिया की **'दाम बांधो नीति'** (लागत मूल्य के 150% से अधिक बिक्री दाम न होना) को व्यावहारिक रूप से लागू नहीं किया जाता, तब तक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का संकट दूर नहीं हो सकता।

शोध का अंतिम निष्कर्ष इस यथार्थपरक प्रश्न का उत्तर देता है कि क्या लोहिया के विचार आज व्यावहारिक रूप से प्रभावी हैं? विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्तमान राजनीति में लोहिया के सिद्धांतों का **"चयनित और विकृत उपयोग"** (Selective and Distorted Appropriation) हुआ है। राजनीतिक दलों ने 'गैर-कांग्रेसवाद' के रणनीतिक व्याकरण को अपनाकर गठबंधन (जैसे NDA और I.N.D.I.A. ब्लॉक) तो बना लिए, परंतु लोहिया की 'वैचारिक शुचिता' और 'नीति-आधारित विरोध' को पीछे छोड़ दिया। इसके बावजूद, समकालीन राजव्यवस्था की संरचनात्मक विवशता है कि वह समाधानों के लिए पुनः लोहिया के दर्शन की ओर लौटे। चाहे वह प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा को वरीयता देने वाली 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' हो, या वैश्विक मंच पर 'ग्लोबल साउथ' (Global South) की आवाज बनकर उभरती भारत की विदेश नीति (जो लोहिया की **'तीसरी शक्ति'** की अवधारणा से मेल खाती है)–इन सब में लोहिया के विचारों की गूंज स्पष्ट दिखाई देती है।

अंततः, यह शोध इस स्थापना के साथ समाप्त होता है कि डॉ. राम मनोहर लोहिया का राजनीतिक विश्लेषण केवल अतीत का अकादमिक पुनरावलोकन नहीं है, बल्कि वह 21वीं सदी के भारत की विकृतियों को सुधारने का एक **'वैचारिक कम्पास' (Ideological Compass)** है। यदि समकालीन भारतीय राजनीति को केवल सत्ता-केंद्रित होने के बजाय लोक-कल्याणकारी, समतावादी और वास्तविक रूप से लोकतांत्रिक बनना है, तो उसे लोहिया के 'सत्याग्रह', 'चौखंभा राज्य' और 'आर्थिक न्याय' के सिद्धांतों को उनके मूल और शुद्ध रूप में आत्मसात करना ही होगा। यही इस शोध की मूल संस्तुति (Recommendation) है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

1. लोहिया, र. म. (1963), *इतिहास चक्र (व्हील ऑफ हिस्ट्री)*. नवहिंद प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. 82।
2. लोहिया, र. म. (1966), *मार्क्स, गांधी और समाजवाद*. समता विद्यालय प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. 145।
3. लोहिया, र. म. (1971), *भारत विभाजन के गुनहगार (गिल्टी मेन ऑफ इंडियाज पार्टीशन)*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 58।
4. लोहिया, र. म. (2000), *जाति प्रथा*. राममनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास, न्यास प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 42।
5. लोहिया, र. म. (2005), *साम्यवादी आंदोलन और समाजवाद*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 102।
6. लोहिया, र. म. (2010), *लोकसभा में लोहिया (खंड -3)*. लोकसभा सचिवालय, नई दिल्ली, पृ. 235।
7. कुमार, अ. (2016), *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन*. ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पृ. 172।
8. नारायण, ज. प्र. (1977), *समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र*. सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 115।
9. देव, आ. न. (1998), *राष्ट्रीयता और समाजवाद*. ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 88।
10. मेहता, व. र. (1995), *भारतीय राजनीतिक चिंतन के आधुनिक प्रतिमान*. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 335।
11. राय, म. (2015), *लोहियावादी समाजवाद और भारतीय राजनीति*. अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 80।
12. शर्मा, र. (2011), *गठबंधन की राजनीति और भारतीय लोकतंत्र*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 148।
13. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद. (2015), *समकालीन भारत में सामाजिक न्याय और जातिगत राजनीति*. आई.सी.एस.एस.आर. जर्नल, नई दिल्ली, पृ. 42।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM